भारत सरकार
स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय
स्वास्थ्य अनुसंधान विभाग

लोक सभा
अतारांकित प्रश्न संख्या: 3302
दिनांक 08 अगस्त, 2025 को पूछे जाने वाले प्रश्न का उत्तर

हल्दी के औषधीय लाभ

† 3302. श्री अरविंद धर्मापुरीः

क्या **स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे किः

(क) क्या सरकार ने हल्दी के औषधीय लाभों/गुणों पर कोई शोध किया है और यदि हाँ, तो तत्संबंधी शोध के निष्कर्ष क्या हैं;

(ख) क्या सरकार ने देश में हल्दी और अन्य औषधीय फसलों के लिए पर्याप्त शोध अवसंरचना विकसित की है और यदि हाँ, तो इस संबंध में विकसित अवसंरचना का ब्यौरा क्या है;

(ग) क्या सरकार ने हल्दी के सेवन से जुड़े प्रतिकूल प्रभावों, विशेष रूप से यकृत क्षति, रक्त पतला होना, पाचन संबंधी गड़बड़ी और इसी प्रकार की प्रतिक्रियाओं के जोखिम पर कोई शोध किया है और यदि हाँ, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है;

(घ) क्या सरकार द्वारा उन सभी एलोपैथिक और आयुर्वेदिक औषधियों और उनके संबंधित उपयोगों सहित एक डेटाबेस तैयार किया गया है/रखा जाता है, जिनमें हल्दी एक घटक के रूप में है;

(ङ) यदि हाँ, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है और यदि नहीं, तो इसके क्या कारण हैं; और

(च) क्या सरकार ने औषधीय उपयोग के लिए हल्दी में करक्यूमिन के आदर्श प्रतिशत का कोई मूल्यांकन/शोध किया है और कौन-कौन से राज्य इस स्तर की हल्दी का उत्पादन कर रहे हैं और यदि हाँ, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है?

उत्तर
स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय में राज्य मंत्री
(श्री प्रतापराव जाधव)

(क), (घ) और (ङ): भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद (आईसीएमआर) ने सूचित किया है कि उसने हल्दी (करकुमा लोंगा) पर मोनोग्राफ तैयार किया है जिसमें औषधीय गुणों और फाइटोकेमिकल्स, औषधीय अनुसंधान, जैव गतिविधियों, प्रतिकूल प्रभावों आदि से संबंधित प्रासंगिक अनुसंधान डेटा की जानकारी शामिल है।

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (आईसीएआर) ने बताया है कि भारतीय मसाला अनुसंधान संस्थान (आईसीएआर-आईआईएसआर), कोझिकोड ने पशु मॉडल में हल्दी और दालचीनी युक्त द्वि-हर्बल अर्क के

मधुमेह-रोधी गुणों पर शोध किया। परिणामों से पता चला कि 150 मिलीग्राम/ग्राम शरीर भार पर द्वि-हर्बल अर्क के प्रशासन से मधुमेह ग्रस्त पशुओं के रक्त शर्करा स्तर में उल्लेखनीय कमी आई। उपचार के परिणामस्वरूप कोलेस्ट्रॉल के स्तर में भी कमी आई। ऊतकों की ऊतक-विकृतिविज्ञानी जाँच से अग्राशय की संरचना में सुधार और यकृत एवं वृक्क में ऊतक संपूर्णता की पुनर्स्थापना देखी गई।

केंद्रीय आयुर्वेदिक विज्ञान अनुसंधान परिषद (सीसीआरएएस) ने बताया है कि उसने 15 रोगों पर हल्दी युक्त 22 पारंपरिक योगों के अध्ययन के साक्ष्य जुटाए हैं। निष्कर्षों से पता चला है कि ये योग संबंधित रोग स्थितियों में सुरक्षित और प्रभावी हैं। विवरण अनुलग्नक में दिया गया हैं।

(ख): भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (आईसीएआर) ने बताया है कि भारतीय मसाला अनुसंधान संस्थान (आईसीएआर-आईआईएसआर), कोझिकोड के पास हल्दी के लिए पर्याप्त अनुसंधान अवसंरचना उपलब्ध है, जैसे कि फील्ड जीन बैंक और हल्दी के गुणवत्ता घटकों का विश्लेषण करने के लिए अत्याधुनिक प्रयोगशालाएँ। इसी प्रकार, आईसीएआर-औषधीय एवं सगंध पादप अनुसंधान निदेशालय, आणंद और आईसीएआर-भारतीय बागवानी अनुसंधान संस्थान, बेंगलुरु के पास अन्य औषधीय फसलों के लिए पर्याप्त अनुसंधान अवसंरचना उपलब्ध है।

विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग (डीएसटी) के तहत एक स्वायत्त संस्थान, पुणे के अगरकर अनुसंधान संस्थान (एआरआई) ने सूचित किया है कि उसके पास औषधीय पौधों के लिए समर्पित अनुसंधान सुविधा है, जिसमें ऊतक संवर्धन, आणविक जीव विज्ञान, फाइटोकेमिस्ट्री और सूक्ष्म जीव विज्ञान प्रयोगशालाएं शामिल हैं।

(ग): भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (आईसीएआर) ने सूचित किया है कि भारतीय मसाला अनुसंधान संस्थान (आईसीएआर-आईआईएसआर), कोझिकोड ने दालचीनी और हल्दी के अर्क के विकास, रक्त मापदंडों और उपापचयी एंजाइम गतिविधियों पर प्रभाव का विश्लेषण करने के लिए पशु अध्ययन किया है। परिणामों से लिवर कैटेलेज गतिविधि में उल्लेखनीय वृद्धि देखी गई और लैक्टेट डिहाइड्रोजनेज (LDH), मैलेट डिहाइड्रोजनेज (MDH), एलानिन एमिनोट्रांस्फरेज (ALT) और एस्पार्टेट एमिनोट्रांस्फरेज (AST) में कोई महत्वपूर्ण परिवर्तन नहीं देखा गया। लिवर की क्षति, रक्त का पतला होना, पाचन संबंधी गड़बड़ी आदि जैसी कोई असामान्यताएँ नहीं देखी गईं।

(च): भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (आईसीएआर) ने आगे बताया है कि भारतीय मसाला अनुसंधान संस्थान (आईसीएआर-आईआईएसआर), कोझीकोड ने हल्दी की विभिन्न किस्मों में करक्यूमिन की मात्रा का विस्तृत मूल्यांकन किया है। उच्च करक्यूमिन मात्रा (5% से अधिक) वाली कई किस्में जैसे आईआईएसआर प्रतिभा, आईआईएसआर प्रगति, एलेप्पी सुप्रीम, रोमा, राजेंद्र सोनिया आदि खेती के लिए जारी की गई हैं। इन किस्मों को कई राज्यों के हल्दी किसानों ने अपनाया है। इसके अलावा, भौगोलिक संकेत (जीआई)-टैग वाली किस्में जैसे पूर्वोत्तर राज्यों की लाकाडोंग हल्दी और महाराष्ट्र की वैगांव हल्दी की खेती भी उनकी उच्च करक्यूमिन सामग्री के लिए की जाती है। इसलिए, उच्च करक्यूमिन किस्मों की उपलब्धता किसी विशेष राज्य या क्षेत्र तक सीमित नहीं है।

*****

अनुलग्नक

31 मार्च, 2025 तक नैदानिक अनुसंधान परियोजनाओं के अंतर्गत मान्य रोग-वार फॉर्मूलेशन*, जिनमें हल्दी एक घटक/घटक के रूप में शामिल है।

क्र. सं.	रोग की स्थिति का नाम	आयुर्वेद सूत्रीकरण का नाम
1.	अग्निमांद्य	1. पिप्पलाद्यासव
2.	एलर्जिक आँख आना	2. हरिद्राखंड
3.	संज्ञानात्मक कमी	3. कल्याणक घृत
4.	टाईप 2 मधुमेह मेलिटस	4. सप्तविंशतिका गुग्गुलु 5. हरिद्रा चूर्ण 6. निसा अमलाकी चूर्ण टैबलेट 7. चंद्रप्रभा वटी 8. निशाकटकादि कषाय
5.	एक्जिमा (विचर्चिका)	9. नलपामाराडी तैला
6.	आवश्यक (प्राथमिक) उच्च रक्तचाप	10. अश्वगंधाद्यरिष्ट
7.	फिशर-इन- एनो (परिकार्तिका)	11. जात्यादि घृत 12. जत्यादि तैला
8.	गठिया के रोगियों में हाइपरयूरिसीमिया (वातरक्ता)	13. निम्बाडी चूर्ण
9.	आयरन की कमी से होने वाला एनीमिया	14. पुनर्नवदी मंडुरा
10.	मानसिक मंदता	15. ब्रह्म रसायन
11.	माइग्रेन (अर्धवाभेदक)	16. पथ्यादि क्वाथ चूर्ण
12.	सोरायसिस (किटिभा)	17. पंचटिक्टागुगुलु घृत 18. बृहन्मारीचद्या तैला 19. नलपामाराडी तैला
13.	रसायन	20. ब्रह्म रसायन
14.	यूरोलिथियासिस	21. चंद्रप्रभा वटी
15.	युवान पिडिका (मुँहासे)	22. निम्बाडी चूर्ण

* कुछ फॉर्मूलेशन विभिन्न रोग स्थितियों या विभिन्न संयोजनों में दोहराए जाते हैं।

{स्रोत: केंद्रीय आयुर्वेदिक विज्ञान अनुसंधान परिषद (सीसीआरएएस) इनपुट्स}

******